48

चेला होने के चिह्न

बाइबल पाठ #19

VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक (क्रमश:)।

ज. हेरोदेस के इलाके से एक और बार निकलना (क्रमश:)।

6. दुष्टात्मा से ग्रस्त एक लड़के को चंगा करना (मत्ती 17:14-21; मरकुस 9:14-29; लूका 9:37-43)।

7. गलील में वापसी पर (यीशु की मृत्यु की फिर भविष्यवाणी) (मत्ती 17:22, 23; मरकुस 9:30-32; लूका 9:43-45)।

झ. मन्दिर का कर देने पर प्रश्न (मत्ती 17:24-27)।

ञ. बच्चों की तरह होने की आवश्यकता पर शिक्षा (मत्ती 18:1-14; मरकुस 9:33-50; लूका 9:46-50)।

परिचय

पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के अन्तिम दिनों में, यीशु ने अपनी विदाई के लिए अपने प्रेरितों को तैयार करने पर ध्यान दिया। चलते-चलते, ''वह नहीं चाहता था, कि कोई जाने। क्योंकि वह अपने चेलों को उपदेश देता और उन से कहता था ...'' (मरकुस 9:30ख, 31)। एक अनुवाद[1] में है, ''वह हर प्रकार की प्रसिद्धि से बचने की कोशिश करता था, ताकि वह अपने चेलों को शिक्षा देने के लिए उनको भरपूर समय दे सके।'' इस शिक्षा के बार-बार आने वाले विषय को ''मेरा चेला होने का क्या अर्थ है'' कहा जा सकता है। प्रेरितों को इन सबकों की आवश्यकता थी; और हमें भी है।

प्रभु की सामर्थ पर भरोसा रखें, न कि अपनी स्वयं की योग्यता पर (मत्ती 17:14-21; मरकुस 9:14-29; लूका 9:37-43)

हमारा अध्ययन यीशु के पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ ''पवित्र पहाड़'' (2 पतरस 1:18) से उतरने के साथ आरम्भ होता है, जहां प्रभु का रूपान्तर हुआ था। जब दस आज्ञाएं लेने के बाद मूसा पहाड़ से नीचे आया था, तो उसका स्वागत अवज्ञा के कोलाहल के साथ हुआ था (निर्गमन 32) और जब मसीह रूपान्तरित होने के बाद पहाड़ से नीचे आया, तो उसका स्वागत अविश्वास की गड़बड़ी के साथ हुआ।

एक आदमी दुष्टात्मा से ग्रस्त अपने पुत्र को चंगाई दिलाने के लिए यीशु के पास लाया था, परन्तु प्रभु के चेले उसमें से दुष्ट आत्मा नहीं निकाल पाए थे। साथ-साथ रहने वाले और

हर बात में गलती निकालने वाले ग्रन्थी मसीह की सेवकाई की इस प्रतिकूल परिस्थिति का लाभ उठा रहे थे।[2] हर जगह पाई जाने वाली विश्वास की कमी (शास्त्री, भीड़, लड़के का पिता, यहां तक कि यीशु के चेलों) से मसीह का मन दुखी हुआ (मत्ती 17:17; मरकुस 9:19; लूका 9:41)। तौ भी उनके अविश्वास के बावजूद, उसने अपने आप को विश्वासपूर्ण[3] दिखाया और उस लड़के को चंगा किया[4] (मत्ती 17:18; मरकुस 9:25, 26; लूका 9:41)।

बाद में, जब प्रभु और उसके प्रेरित अकेले थे, तो उन्होंने उससे पूछा, ''हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?'' (मत्ती 17:19; मरकुस 9:28)। उसने उत्तर दिया, ''अपने विश्वास की घटी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे कि यहां से सरक कर वहां चला जा, तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए अनहोनी न होगी'' (मत्ती 17:20)।[5] कहानी वाले पिता की तरह (मरकुस 9:24), चेलों ने विश्वास किया-तौ भी वास्तव में उन्होंने विश्वास नहीं किया था (मत्ती 17:20)। हमारी तरह, उन्हें भी विश्वास करने में कठिनाई आई।

बहुत से लेखकों का मानना है कि चेले दुष्टात्मा को इसलिए नहीं निकाल पाए थे, क्योंकि वे *अपनी* क्षमता पर भरोसा कर रहे थे।[6] पौलुस ने लिखा है कि ''हम अपना भरोसा न रखें, वरन परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है'' (2 कुरिन्थियों 1:9)। बहुत पहले, दाऊद ने कहा था, ''धर्म के बलिदान चढ़ाओ, और *यहोवा पर भरोसा रखो* '' (भजन संहिता 4:5)। बुद्धिमान ने इसी भावना को व्यक्त किया था, ''तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना'' (नीतिवचन 3:5)।

सच्चा चेला अपनी कमियों को स्वीकार कर लेता है (रोमियों 3:10)। अपनी सामर्थ के लिए वह प्रभु पर भरोसा रखता है (देखें 2 शमूएल 22:31; भजन संहिता 9:10; 37:3, 5; 40:3, 4; 115:10, 11; यशायाह 26:4; फिलिप्पियों 2:24)।

प्रभु के वचन पर निर्भर रहें, न कि अपनी समझ पर (मत्ती 17:22, 23; मरकुस 9:30-32; लूका 9:43-45)

यीशु और वे बारह ''कैसरिया फिलिप्पी के देश'' से (मत्ती 16:13; देखें मरकुस 8:27) गलील में आए (मत्ती 17:21; मरकुस 9:30)।[7] पिछले दौरों के विपरीत इस बार, मसीह उस इलाके में जाते हुए भीड़ से दूर रहा। जैसे कि पहले भी कहा गया था, ''वह नहीं चाहता था कि कोई जाने। क्योंकि वह अपने चेलों को उपदेश देता ... था'' (मरकुस 9:30, 31)।

एक विषय, जिस पर वह बार-बार आ रहा था, उसकी होने वाली मृत्यु थी: ''... वह अपने चेलों को उपदेश देता और उन से कहता था, कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे, और वह मरने के तीन दिन बाद जी उठेगा''[8] (मरकुस 9:31; देखें मत्ती 17:22, 23)।

लूका के वृत्तांत के अनुसार, उसने इस घोषणा की भूमिका यह कहकर दी कि ''ये

बातें तुम्हारे कानों में पड़ी रहें'' (लूका 9:44क)। यह, यह बात कहने का स्पष्ट ढंग था कि ''सुनो, सचमुच सुनो! सुनो और इस पर विचार करो! जो मैं कहता हूं, उसे सुनो और याद रखो! सुनो और समझो!'' सुनना और कान लगाकर सुनना में काफी अन्तर है। जब भी प्रभु बात करता है, हमें अपने कानों और मन में उसके शब्द *डालने* आवश्यक हैं, ताकि हम उन्हें अपने जीवनों में दिखा सकें!

चेले यीशु की बातों से ''बहुत उदास हुए'' थे (मत्ती 17:23), परन्तु एक बार और ''यह बात उनकी समझ में नहीं आई'' (मरकुस 9:32क)। उन्हें उसकी मृत्यु की बात समझ नहीं आई, क्योंकि मसीहा के मरने का विचार मसीहा के बारे में उनकी आशाओं के विपरीत था।[9] उन्हें उसके जी उठने की बात समझ में नहीं आई, क्योंकि यह अवधारणा उनके अनुभव के विपरीत थी (मरकुस 9:10)।

बेशक उन्हें समझ नहीं आया था, फिर भी वे और व्याख्या के लिए ''उससे पूछने से डरते थे'' (मरकुस 9:32ख)। हो सकता है कि वे इसलिए डरते हों, कि उनके प्रश्न करने से लगेगा कि उन्हें विश्वास नहीं है। हो सकता है कि वे इसलिए भी डरते हों कि कहीं उन्हें भी पतरस की तरह डांट न पड़े (मत्ती 16:23)। हो सकता है कि वे अपनी अज्ञानता छिपा रहे हों। मुझे बहुत पहले यह समझ आ गई कि नया ज्ञान पाने का एकमात्र ढंग अपनी अज्ञानता को मान लेना है। इस प्रकार की स्वीकृति कष्टदायक तो होती है, परन्तु है यह आवश्यक।

इस घटना के लूका के वृत्तांत में एक उलझाने वाला विवरण जोड़ा गया है: ''... वे इस बात को न समझते थे *और यह उन से छिपी रही;* कि वे उसे जानने न पाएं ...'' (लूका 9:45)। चेलों से किस ने या क्या छिपाया था? हो सकता है कि प्रभु ने इसका उत्तर इसलिए छिपाया हो, क्योंकि यदि वे यीशु की बात को पूरी तरह से समझ जाते तो उससे बहुत प्रभावित हो जाते। शैतान ने इसे छिपाया हो सकता है; आखिर, वह लोगों के मन से वचन को चुराने की कोशिश करता रहता है (लूका 8:12)। परन्तु मुझे लगता है कि बर्टन कॉफ़मैन सही था, जब उसने कहा, ''यह छिपाया जाना परमेश्वर की [मैं इसमें जोड़ता हूं, ''या शैतान की''] योजना के कारण नहीं, परन्तु मनुष्यों की सीमाओं के कारण था।''[10] लगता है कि छिपाने का कारण राज्य के बारे में प्रेरितों की पहले से बनी धारणा थी।

ऐसा था या नहीं, चेलों को प्रभु द्वारा अपनी निकट आ रही मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के बारे में कही, बात को स्वीकार करना कठिन लगा *था*। चेले होने के एक आवश्यक गुण में, जो कुछ प्रभु कहता है उसे स्वीकार करना है, चाहे यह उसके विचारों से या तर्क से मेल खाता हो या नहीं। पौलुस ने मनुष्य की बुद्धि पर निर्भर रहने की व्यर्थता पर ज़ोर देते हुए लिखा है:

> क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ हैं। क्योंकि लिखा है, कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूंगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूंगा। कहां रहा

> ज्ञानवान? कहां रहा शास्त्री? कहां इस संसार का विवादी? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया? क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे। (1 कुरिन्थियों 1:18-21)

सच्चा चेला मानवीय तर्क पर नहीं (नीतिवचन 3:5), बल्कि ईश्वरीय प्रकाशन पर निर्भर रहता है (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

प्रभु के उद्देश्य को आगे रखें, न कि अपने अधिकारों को (मत्ती 17:24-27[11])

यीशु और उसके साथी गलील में घूमते हुए, उस नगर में आए, जहां प्रभु की सेवकाई के समय उसका मुख्यालय था। ''जब वे कफ़रनहूम में पहुंचे, तो मन्दिर के लिए कर लेने वालों ने पतरस के पास आकर पूछा, क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता?'' (आयत 24)।

यूनानी पवित्र शास्त्र में ''दो द्राखमा'' है।[12] द्राखमा[13] रोमी दीनार के बराबर एक यूनानी सिक्का था (देखें लूका 7:41; यूहन्ना 6:7)-जो एक साधारण मजदूर की एक दिन की मजदूरी होती थी[14] (मत्ती 20:2)।

पवित्र शास्त्र में, आयत 24 में ''कर'' शब्द नहीं मिलता, परन्तु यीशु ने आयत 25 में इस शब्द का इस्तेमाल किया। मूसा की व्यवस्था के अनुसार आवश्यक था कि बीस वर्ष का या इससे बड़ा हर यहूदी नर मन्दिर के रख-रखाव और आराधना के खर्च के लिए आधा शेकेल दे (निर्गमन 30:11-16; देखें 2 राजा 12:12; 2 इतिहास 24:5-9; नहेमायाह 10:32)। शेकेल चार दीनार या चार द्राखमा का होता था, सो आधा शेकेल दो दीनार या दो द्राखमा के बराबर हुआ।

रोमी कर इकट्ठा करने वालों के विपरीत, ये कर लेने वाले, मन्दिर के यहूदी अधिकारी होंगे। कर आम तौर पर बसन्त ऋतु में दिया जाता था और अभी पतझड़ ही शुरू हुआ था; परन्तु मसीह कई महीने से कफ़नरहूम (अपने ''रहने के स्थान'') से बाहर था। कर लेने वालों ने जब सुना कि वह नगर में लौट आया है तो वे उसे ढूंढ़ने लगे। हो सकता है कि उन्होंने एक कोटा पूरा करना हो, परन्तु लगता है कि उनकी रुचि उसके विरुद्ध आपराधिक प्रमाण इकट्ठे करने में थी।

कफ़नरहूम में मसीह आम तौर पर पतरस के घर ही रुकता था (देखें मरकुस 1:29, 30; 2:1), जिस कारण अधिकारी उसे ढूंढ़ने के लिए वहीं गए। घर के बाहर पतरस से मिलकर,[15] वे पूछने लगे, ''क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का [दो द्राखमा] कर नहीं देता?'' (मत्ती 17:24ख)। हाज़िर जवाब प्रेरित ने कहा, ''हां देता तो है'' (आयत 24ग)। हो सकता है कि उसने ''हां'' इसलिए कहा, क्योंकि प्रभु ने पहले एक बार कर दिया था। शायद उसने यह जवाब इसलिए दिया, क्योंकि वह जानता था कि मसीह ने कानून का पालन करना

सिखाया था। शायद, जैसा कि पतरस के साथ अक्सर होता था, उसने वही कहा जो उसके मन में आ गया।

पतरस का जो भी कारण हो, परन्तु प्रभु जो जानता था कि क्या हुआ था, ने इसे एक महत्वपूर्ण सबक सिखाने के लिए अवसर के रूप में देखा। ''जब [प्रेरित] घर में आया,'' घटना को जोड़कर देखने से पहले, ''तो यीशु ने उस के पूछने से पहिले उस से कहा, हे शमौन! तू क्या समझता है? पृथ्वी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्र से या परायों से?'' (आयत 25ख)। पतरस को इस प्रश्न से कोई परेशानी नहीं थी। उसने बेबाकी से उत्तर दिया, ''परायों से'' (आयत 25ग)। यीशु ने उत्तर दिया, ''तो पुत्र बच गए'' (आयत 26ख)। स्पष्ट संकेत यह है कि, राजा (परमेश्वर) का पुत्र होने के कारण, मसीह को अपने पिता के घर (मन्दिर) का कर देने से छूट है।[16] इसे दूसरे ढंग से कहें, तो उसे *अधिकार* था कि वह कर न दे- परन्तु पतरस को यह सीखना आवश्यक था कि यदि ऐसा करने से वह अपने प्रभु के उद्देश्य को हानि पहुंचाता है, तो उसे अपने अधिकार पर ज़ोर नहीं देना चाहिए।

यीशु ने आगे कहा, ''तौ भी इसलिए कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं, तू झील के किनारे किनारे जाकर बंसी डाल,[17] और जो मछली पहिले निकले, उसे ले और उस का मुंह खोलने पर तुझे एक सिक्का [शेकेल] मिलेगा, उसी को लेकर मेरे और अपने बदले उन्हें दे देना'' (आयत 27)। रिचर्ड रोज़र्स ने लिखा है, ''कैसा विरोधाभास है! गरीबी का मारा राजा मन्दिर का वार्षिक कर केवल आधा शेकेल देता है।''[18] अनुवादित शब्द ''सिक्का'' यूनानी में *sater* है, जो चार द्राखमा के मूल्य का एक यूनानी सिक्का है[19]–जो दो लोगों के लिए मन्दिर का कर देने के लिए काफ़ी था।

मसीह द्वारा सुझाया गया आश्चर्यकर्म सबसे हटकर है। यही एक आश्चर्यकर्म है जिसमें धन शामिल है, यही एक ऐसा आश्चर्यकर्म है, जिससे उसे निजी तौर पर लाभ हुआ। यही एकमात्र आश्चर्यकर्म की घटना है, जिसके परिणाम के बारे में हमें नहीं बताया गया, और बिना किसी शक के यह प्रभु के आश्चर्यकर्मों में सबसे अजीब है। निश्चय ही, हम यीशु द्वारा एक *मछुआरे* को कहे शब्दों में हंसी का स्पर्श देखते हैं–जो अक्सर बिना सोचे ही अपना *मुंह* खोलता रहता था, उसे अपनी समस्याओं का हल *मछली के मुंह* में ढूंढ़ने के लिए कहा गया।

परन्तु, ध्यान रहे कि आश्चर्यकर्म की चमक से यीशु के निर्देश के मुख्य शब्द ओझल न हो जाएं: ''इसलिए कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं।'' यूनानी शब्द का अनुवाद ''ठोकर'' वह शब्द है, जिससे हमें ''चोट पहुंचाना'' शब्द मिला है। मसीह का उद्देश्य अधिकारियों की संवेदनाओं को ठोकर पहुंचाना नहीं था! उसका उद्देश्य कुछ ऐसा करना *था,* जिससे उसकी सेवकाई पर प्रतिकूल प्रकाश पड़े। वह पतरस को यह समझाना चाहता था कि सही काम करने के लिए अपने अधिकारों को पीछे करना आवश्यक है।

यह विचार ''नागवार'' (यूहन्ना 6:60) है। अपने अधिकारों की मांग करना स्वाभाविक है। हम मांग करते हैं कि हमें हमारा हक मिलना चाहिए। हम किसी भी व्यक्ति का, जो हमें

हमारे अधिकारों से वंचित रखता है, विरोध करेंगे। यीशु इस स्वाभाविक आवेश अर्थात हमेशा यह सोचना कि हमारे कामों से उसका उद्देश्य कैसे प्रभावित होगा, से ऊपर उठने को कहता है। पवित्र शास्त्र के इन शब्दों का इस्तेमाल करें, यदि अपने अधिकारों पर ज़ोर देने से मसीह के उद्देश्य के लिए ''रुकावट'' बनती है, तो हमें अपने अधिकार छोड़ देने चाहिए।

यीशु ने ऐसी तैयारी की केवल शिक्षा ही नहीं दी, उसने जीवन में ऐसा ही त्याग किया भी था, हमने उसकी सेवकाई के आरम्भ में इसका प्रदर्शन देखा था: ''निष्पाप'' होने के कारण उसे अधिकार था कि यूहन्ना से बपतिस्मा न ले (इब्रानियों 4:15; देखें मत्ती 3:14), परन्तु उसने ''सब धार्मिकता को पूरा करने'' के लिए अपने इस अधिकार का त्याग कर दिया (मत्ती 3:15)। मसीह की सेवकाई के अन्त में हम एक नमूना देखें: उसे अधिकार था कि न मरे क्योंकि उसने मृत्यु के योग्य कोई काम नहीं किया था (लूका 23:4), परन्तु उसने उस अधिकार को छोड़ दिया, ताकि हमारा उद्धार हो सके (1 कुरिन्थियों 15:3)।

सच्चा चेला अपने अधिकारों की इतनी परवाह नहीं करता, जितनी प्रभु को महिमा पाते देखने और उसके काम के बढ़ने की करता है![20]

प्रभु के काम को बढ़ाएं, न कि अपने हितों को (मत्ती 18:1-14; मरकुस 9:33-50; लूका 9:46-50)

कुछ समय पहले, यीशु ने मसीहा के अपने राज्य को, जिसे उसने बनाना था, कलीसिया के रूप में बताया था (मत्ती 16:18, 19)। वह अपने अनुयायियों को समझाने की लगातार कोशिश करता रहा कि उसका राज्य सांसारिक, पृथ्वी का या राजनैतिक नहीं, बल्कि आत्मिक होगा। यह किसी नक्शे पर नहीं, बल्कि लोगों के मनों पर बना होगा, परन्तु उसके चेले इस सच्चाई को समझने में पूरी तरह नाकाम रहे। उनकी नासमझी अगली घटना से पता चलती है।

एक दिन जब वे जा रहे थे, तो बारहों चेले इस पर बहस करने लगे कि ''राज्य में'' ''उन में से सबसे बड़ा कौन'' होगा (लूका 9:46; देखें मत्ती 18:1; मरकुस 9:34)। उनमें यह बहस पतरस से की गई यीशु की प्रतिज्ञा के कारण (मत्ती 16:19) या प्रभु द्वारा केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ पहाड़ पर ले जाने के कारण हुई होगी (मत्ती 17:1)। इसका कारण नहीं बताया गया, परन्तु हमारे पास कोई कारण नहीं है, चाहे वह पतरस हो या याकूब या यूहन्ना, को किसी भी बहस से बाहर करें, जो सम्भवतया यह मानते थे कि प्रभु पृथ्वी के राज्य में उन्हें ऊंचे पदों पर बैठाने की सोच रहा है![21]

मंज़िल पर पहुंच कर,[22] मसीह ने उनसे पूछा, ''रास्ते में तुम किस बात पर विवाद करते थे?'' (मरकुस 9:33)। पहले तो, उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया (मरकुस 9:34) शायद वे घबरा गए थे। परन्तु जब यह स्पष्ट हो गया कि यीशु को मालूम है कि वे क्या चर्चा कर रहे थे (लूका 9:47), तो उन्होंने पूछा, ''स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?'' (मत्ती 18:1)।

बच्चों से सम्बन्धित प्रारम्भिक पाठ

जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने लिखा है, ''यदि यीशु पतरस को श्रेष्ठ होने की बात बताना चाहता, तो इससे अच्छा अवसर नहीं था।''[23] इसके विपरीत मसीह ने इस अवसर का इस्तेमाल सबसे आवश्यक सबक सिखाने के लिए किया: ''यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सब से छोटा और सब का सेवक बने''; ''क्योंकि जो तुम में सब से छोटे से छोटा है, वही बड़ा है'' (मरकुस 9:35; लूका 9:48ख)।

इस संदेश को अच्छी तरह समझाने के लिए, उत्तम गुरु ने एक जीवित विज़ुअल-एड का इस्तेमाल किया: ''उस ने एक बालक[24] को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया'' (मत्ती 18:2)। ''बालक को लेकर'' (मरकुस 9:36), उसने अपने चेलों से कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं पाओगे। जो कोई अपने आप को इस बात के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा'' (मत्ती 18:3, 4)।

मसीह के शब्दों से कई सच्चाइयां पता चल सकती हैं। उदाहरण के लिए, उनसे इस शिक्षा की गलती सामने आती है, जिसमें यह विश्वास किया जाता है कि आदम के पाप के कारण कोई बालक जन्म के समय ''पूर्णतया वंचित'' होता है। यीशु ने कहा कि राज्य में प्रवेश के लिए हमें बच्चों *जैसा* बनना आवश्यक है। फिर प्रभु के शब्दों से शिशुओं के तथाकथित बपतिस्मे के भ्रम का भी पता चलता है, अर्थात यह कि बच्चा ''जैसे है'' वैसे ही राज्य के लिए तैयार है और राज्य में प्रवेश करने के लिए उसे मनुष्यों द्वारा बनाए किसी समारोह की आवश्यकता नहीं है।

परन्तु मसीह अपने उदाहरण में एक सच्चाई पर ध्यान दिला रहा था और वह है दीनता की आवश्यकता,[25] अर्थात सेवा कराने के बजाय सेवा करने की इच्छा होना। उस समय बच्चों को सामाजिक तौर पर महत्व नहीं दिया जाता था। आज अक्सर बच्चों को प्राथमिकता दी जाती है, परन्तु उस जमाने में, उन्हें अन्त में ही रखा जाता था। प्रभु अपने चेलों को यह दिखाने का प्रयास कर रहा था कि उसके राज्य में महत्वपूर्ण होने के लिए, उन्हें एक तुच्छ भूमिका पाने को तैयार रहना चाहिए।[26]

दीनता की आवश्यकता पूरे नये नियम में सिखाई गई है।[27] पौलुस ने कहा, ''... झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो पर दीनता से एक-दूसरे को अपने से अच्छा समझो'' (फिलिप्पियों 2:3)। पतरस ने लिखा है:

> ... तुम सब के सब एक-दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बान्धे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का साम्हना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।
>
> इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए (1 पतरस 5:5, 6)।

प्रथम होने के लिए, अन्तिम होना आवश्यक है! महान बनने के लिए, तुच्छ बनना आवश्यक है! पहली शताब्दी के श्रोताओं के लिए इन शिक्षाओं को समझना कठिन था,

स्वीकार करना तो बहुत दूर की बात था। आज के अपने आप में फूले और अपने आप को ऊंचा करने वाले इस घमण्डपूर्ण संसार में यह और भी कठिन है। यदि आप मेरे जैसे हैं, तो मसीह के शब्द आपके मन में एक प्रार्थना के लिए आते हैं: ''हे परमेश्वर, और दीन बनने में मेरी सहायता कर। बच्चों जैसा बनने में सहायता कर।''

बच्चों से सम्बन्धित सहायक सबक

यीशु के जीवन्त उदाहरण से एक ऐसा संदेश मिला, जिसमें कई प्रकार की शिक्षाएं थीं, जिनका सम्बन्ध प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बच्चों से था (मत्ती 18:5-14; विशेषकर 5, 6, 10, और 14 आयतों पर ध्यान दें)। संदेश में आगे, ''छोटे'' में केवल बच्चों को ही शामिल नहीं किया गया था, बल्कि बच्चों जैसे विश्वास वाले चेलों को भी शामिल किया गया[28] (शायद विशेष ज़ोर नये बने चेलों पर था)। अधिकतर सबक छोटे बच्चों और बच्चों के समान चेलों पर लागू होते हैं।

छोटों को ग्रहण करना (मत्ती 18:5; मरकुस 9:37; लूका 9:48-50)। मसीह ने अपने उपदेश के इस भाग को यह कहकर शुरू किया कि ''छोटों'' का स्वागत होना चाहिए: ''जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता है, वह मुझे नहीं, वरन मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है'' (मरकुस 9:37)।[29] छोटे बच्चों को विशेष स्थान दिया गया। सब में भलाई या बुराई करने की क्षमता होती है। हमें उन्हें कभी हानिकारक नहीं समझना चाहिए। हमें उनसे प्रेम करना, उनकी देखभाल करना और उनकी रक्षा करने का प्रयास करना चाहिए। हमें उन्हें अवसर के रूप में देखना चाहिए। हमें चाहिए कि उन्हें सही मार्ग में सिखाने और प्रशिक्षण देने के लिए जो भी कर सकते हैं, वह करें (नीतिवचन 22:6)।

लोगों को ''ग्रहण करने'' और ''मेरे नाम से'' वाक्यांश के इस्तेमाल ने यूहन्ना को हाल ही की एक घटना याद करा दी, जिस दौरान उसने किसी को ग्रहण *नहीं* किया था, जो मसीह के नाम में कुछ कर रहा था। जैसा कि छात्र कई बार करते हैं, उसने अपने गुरु को बीच में टोक दिया: ''हे स्वामी, हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा, और हम ने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ होकर तेरे पीछे नहीं हो लेता'' (लूका 9:49)।

यह ''एक मनुष्य'' जिसकी यूहन्ना ने बात की थी कौन था? यह बाइबल नहीं बताती। क्योंकि यह ''एक मनुष्य'' दुष्टात्माओं को निकाल रहा था, स्पष्टतया वह ढोंगी नहीं था, जैसा कि बाद में कुछ लोगों ने जादू-टोने के नाम पर यीशु के नाम का इस्तेमाल करने की कोशिश की (प्रेरितों 19:13-16)। याद रखें कि बारह के अलावा यीशु के और भी चेले थे (लूका 6:13) और यह कि प्रभु ने पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान केवल प्रेरितों को ही आश्चर्यकर्म करने की शक्तियां नहीं दी थीं (देखें लूका 10:1, 17)।

यूहन्ना के वाक्य में मुख्य शब्द सम्भवतया ये हैं: ''... वह *हमारे साथ* होकर तेरे पीछे नहीं हो लेता।'' अन्य शब्दों में, वह उन बारह प्रेरितों में से नहीं था, जो उस समय प्रभु के

साथ जा रहे थे। याद रखें कि इस चर्चा की पृष्ठभूमि प्रेरितों की द्वेषपूर्ण भावना थी। इन बारह को यीशु के किसी और चेले से ईर्ष्या हुई होगी, जिसे प्रेरित न होने के बावजूद वह करने का विश्वास था, जिसे कुछ समय पहले प्रेरित नहीं कर पाए थे (मत्ती 17:16, 19, 20)।

यीशु ने यूहन्ना को उत्तर दिया, ''उस को मत मना करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं, जो मेरे नाम से सामर्थ का काम करे, और जल्दी से मुझे बुरा कह सके। क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है'' (मरकुस 9:39, 40)। प्रभु का मुख्य विचार स्पष्ट लगता है। वास्तव में वह कह रहा था, ''हमें जितने मित्र मिल सकें, उतने चाहिए। आज इतने लोग मेरी बुराई कर रहे हैं कि यह जानकर कि कम से कम एक आदमी मेरी बुराई नहीं करेगा, अच्छा लगता है।''[30]

अफ़सोस, कुछ लोग 40 आयत ''जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है'' का इस्तेमाल यह सिखाने के लिए करते हैं कि परमेश्वर किसी को भी, जो उसके ''लिए'' काम करने का दावा करता है और उसके नाम में भले काम करता है, स्वीकार कर लेगा। इसलिए वे ज़ोर देते हैं कि हमें ऐसे लोगों को स्वीकार कर लेना चाहिए, चाहे वे यीशु की आज्ञाओं को मानते हों या नहीं। यह व्याख्या मत्ती 7:21-23 का विरोधाभास होगी:

> जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, *और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला,* और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए? तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ।

मरकुस 9:40 प्रभु द्वारा पहले घोषित एक सच्चाई का दूसरा पहलू है: ''जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिथराता है'' (मत्ती 12:30)। दोनों आयतों को साथ-साथ रखने पर, यीशु के तटस्थ होने की असम्भावना का ऐलान होता है।

मरकुस 9:41 में यीशु स्वागत ग्रहण करने के विषय पर वापस आ गया, केवल उसने अब इस विषय को अपने प्रेरितों पर लागू किया: ''जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिए पिलाए कि तुम मसीह के हो तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह अपना प्रतिफल किसी रीति से न खोएगा''। यह वाक्य कहते हुए, प्रभु उद्धार की सभी शर्तों को एक ही आयत में और एक ही कार्य में समेट नहीं रहा था। यदि वह ऐसा कर रहा होता, तो हमारा काम केवल विश्वास करने और बपतिस्मा लेने के लिए ही होता (मरकुस 16:15, 16; गलतियों 3:26, 27); हम केवल लोगों को पानी का कटोरा पकड़ाकर और उनसे वह पानी मसीही लोगों को देने का आग्रह ही कर सकते हैं। यीशु तो यह कह रहा था कि परमेश्वर तब प्रसन्न होता है, जब लोग उसका नाम पहनने वालों को प्रोत्साहित करते हैं।

छोटों में फिर से शक्ति डालना (मत्ती 18:6-10; मरकुस 9:42-50)। फिर मसीह

''छोटों'' के विषय पर लौट आया: ''पर जो कोई इन छोटों में से, जो मुझ पर विश्वास करते हैं, एक को ठोकर खिलाए, उस के लिए भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र में डुबोया जाता'' (मत्ती 18:6; देखें मरकुस 9:42)। यूनानी शब्द का अनुवाद ''चक्की का पाट'' चक्की के एक बड़े पत्थर को कहा गया है कि इसे एक गधे द्वारा हिलाया जाए। इतना भार[31] गले में डालकर समुद्र में लटकाया जाना एक त्रासदी होनी थी, परन्तु ''छोटों'' को ठोकर दिलाने जितनी बड़ी नहीं।

शिक्षा वही है, चाहे हम ''छोटों'' शब्द को बच्चों पर, नये चेलों पर या साधारण मसीहियों पर लागू करें: हमें कोशिश करनी चाहिए कि कोई ऐसा काम न करें, जिससे दूसरों को गलती करने के लिए प्रोत्साहन मिले (देखें रोमियों 14:13, 21)। उस मनुष्य पर ''हाय'' कहा गया है, जिसके द्वारा ठोकर लगती है (मत्ती 18:7)।

यीशु के शब्द अपने आप की जांच करने के लिए कहते हैं: क्या हम में कोई ऐसी बात है, जिससे दूसरों को हानि होती है? यदि हां, तो उसे अपने जीवन में से निकाल देना चाहिए:

> यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल, टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना, तेरे लिए इस से भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं। ... यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना, तेरे लिए इस से भला है, कि दो पांव रहते हुए नरक में डाला जाए। ... यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना, तेरे लिए इस से भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक में डाला जाए। जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती[32] (मरकुस 9:43-48)।

यीशु ने उसी और वैसी ही शब्दावली का इस्तेमाल किया, जैसी पहाड़ी उपदेश में पहले की थी (देखें मत्ती 5:27-30)। प्रभु देह को अपंग करने, परन्तु आत्मा को सुधारने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था। कोई भी बात जो हमारे जीवनों में बुराई को प्रोत्साहित करती है, चाहे वह कितनी भी मूल्यवान क्यों न हो, बेरहमी से उसे निकाल देना चाहिए।

नरक की बात करते हुए, ''जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती,'' यीशु ने ये अप्रत्याशित शब्द जोड़े, ''क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा'' (मरकुस 9:49)।[33] उसने पहले चीज़ों को *खराब होने से बचाने* वाली चीज़ के रूप में नमक के उदाहरण का इस्तेमाल किया था (मत्ती 5:13)। यहां भी सम्भवतया यही विचार है कि दुष्ट लोग नरक की झील में ''सम्भालकर'' रखे जाएंगे; अर्थात वे कभी नहीं मरेंगे। स्वर्ग में रखे जाने का आश्वासन एक महिमामय विचार है; नरक में रखे जाने का विचार सोच से बाहर आतंकित करने वाला है।

अगली आयत में, मसीह ने नमक के रूपक को एक और मोड़ दिया: ''नमक अच्छा है, पर यदि नमक की नमकीनी जाती रहे, तो उसे किस चीज़ से स्वादिष्ट करोगे? अपने में नमक

रखो, और आपस में मेल-मिलाप से रहो'' (मरकुस 9:50)। प्रभु यह प्रासंगिकता जोड़ते हुए कि यदि वे आपस में विवाद करते रहें (लूका 9:46), तो अपना स्वाद खो देंगे, अर्थात वे ''पृथ्वी का नमक'' नहीं बन सकते, पहाड़ी उपदेश (मत्ती 5:13) की अपनी बात दोहरा रहा था। जैसे आपको और मुझे एक-दूसरे के साथ सुलह सलामती से रहना सीखने की आवश्यकता है, वैसे ही उन्हें भी ''आपस में मेल-मिलाप से'' रहना सीखने की आवश्यकता थी!

छोटों का सम्मान करना (मत्ती 18:11[34])। एक बार फिर, यीशु ''छोटों'' के अपने विषय पर वापस आया: ''देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि स्वर्ग में उनके दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं'' (मत्ती 18:11)। यूनानी शब्द का अनुवाद ''तुच्छ'' ''नीचा'' और ''मन'' के लिए शब्दों का मेल है। इससे वही संकेत मिलता है, जिससे हमारा भाव किसी दूसरे को ''नीचा देखना'' होता है। हमें बच्चों को ... या नये चेलों ... या परमेश्वर के किसी और बालक को छोटा नहीं समझना चाहिए। परमेश्वर की नज़र में हर कोई बहुमूल्य है।

आयत 11 का अन्तिम भाग आकर्षक और आशा देकर निराश करने वाला है: ''स्वर्ग में उनके दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं।'' ये कुछ शब्द हैं, जिनसे लोगों में यह धारणा बनी है कि यह ''संरक्षक स्वर्गदूतों'' के बारे में लिखा गया है। बाइबल सिखाती है कि स्वर्गदूत ''सेवा टहल करने वाली आत्माएं हैं; जो उद्धार पाने वालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं?'' (इब्रानियों 1:14)। इसके अलावा, मैक्गर्वे की मानें तो यह आयत सुझाव देती है कि ''स्वर्गदूतों का सेवा करना केवल सामान्य नहीं, बल्कि विशेष है, अर्थात निश्चित लोगों की देखभाल के लिए निश्चित स्वर्गदूतों को लगाया गया है।''[35] इन साधारण सच्चाइयों से आगे कोई भी विचार केवल अनुमान है।

यह तथ्य कि कभी-कभी भीषण ढंग से, प्रतिदिन मरने वाले बच्चों की मृत्यु से यह विश्वास होना काफी है कि ''संरक्षक स्वर्गदूतों'' को परमेश्वर के प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करने की अनुमति नहीं है। वास्तव में परमेश्वर के वचन का सामान्य पाठ यह सुझाव देगा कि उनकी मुख्य दिलचस्पी शारीरिक स्वास्थ्य न होकर, आत्मिक भलाई है। इस बात के प्रमाण के लिए कि परमेश्वर अपने लोगों की देखभाल करता है, मत्ती 18:11 पर विचार करके [नये अनुवाद में यह संख्या अन्य अग्रेज़ी संस्करणों की तरह 11 है-अनुवादक] और वहीं बस करके हम अच्छा करेंगे (1 पतरस 5:7; देखें यहेजकेल 34:12)।

छोटों को बहाल करना (मत्ती 18:12-14)। प्रभु ने ''छोटों'' पर अपनी शिक्षा हम में से बहुतों में परिचित एक उदाहरण देकर समाप्त की:

> तुम क्या समझते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक भटक जाए, तो क्या निन्नानवे को छोड़ कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूंढ़ेगा? और यदि ऐसा हो कि उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह उन निन्नानवे भेड़ों के लिए जो भटकी नहीं थीं इतना आनन्द नहीं करेगा जितना

कि इस भेड़ के लिए करेगा। ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नाश हो (मत्ती 18:12-14)।

बाद में यीशु ने बाइबल के सबसे यादगारी अध्यायों में से एक लूका 15 अध्याय बनाने के लिए खोए हुए सिक्के और खोए हुए लड़के के रूपकों के साथ खोई हुई भेड़ का रूपक जोड़ दिया। यहां भी उसकी वही बात है: परमेश्वर ''नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सबको मन फिराने का अवसर मिले'' (2 पतरस 3:9)।

फिर, यह प्रासंगिकता कई ''छोटों'' के लिए बनाई जा सकती है, जैसे छोटे बच्चे बड़े होकर पाप के पहाड़ों में खो जाते हैं (रोमियों 3:23); हमें उन्हें कोमलता से प्रभु में वापस लाना आवश्यक है। एक नया चेला-या पुराना चेला-विश्वास से ''दूर'' जा सकता है (इब्रानियों 2:1); हमें ''नम्रता के साथ ऐसे को सम्भालना'' चाहिए (गलातियों 6:1; देखें याकूब 5:19, 20)।

सारांश

यीशु का संदेश समाप्त नहीं हुआ था। जैसा कि हम देखेंगे, वह भाइयों में आपसी सम्बन्ध के बारे में बड़ा स्पष्ट था (मत्ती 18:15-35)। इस महत्वपूर्ण विषय पर हमारी चर्चा अगले अध्याय में भी जारी रहेगी।

अन्त में,[36] मैं मत्ती 18:3, 4 में प्रभु की बात पर वापस आना चाहता हूं, ''मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं पाओगे। जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।'' हमारे अध्ययन से यह पता चला है कि राज्य में जब तक कोई अपने आप को बच्चे की तरह विनम्र या छोटा नहीं बनाता, तब तक वह *बड़ा* नहीं बन सकता! अब मैं यह ध्यान दिलाना चाहता हूं कि मसीह ने कहा कि बिना ऐसी विनम्रता के कोई उसके राज्य में *प्रवेश* नहीं कर सकता।

कई लोग इतने घमण्डी हैं कि वे यह मानने को तैयार नहीं हैं कि वे पाप में खोए हुए हैं; कई इतने घमण्डी हैं कि वे अपने जीवन में यीशु की आवश्यकता को मानने से इनकार करते हैं; कई इतने घमण्डी हैं कि बपतिस्मा लेकर उसकी इच्छा को पूरा नहीं करते। ऐसा घमण्ड उनकी आत्मा के नाश का कारण होगा! मेरी प्रार्थना है कि विनाशकारी घमण्ड आपके जीवन पर राज न करे।[37] यदि आपने प्रभु की इच्छा पूरी नहीं की है, तो अपने घमण्ड को उतार फैंकें और आज ही उसकी इच्छा पूरी करें!

नोट्स

इस पाठ के कई भागों से प्रवचन बनाए जा सकते हैं। दुष्टात्मा वाले लड़के को चंगा करने पर प्रवचन इस पाठ के बाद है। इस कहानी को बताने का एक और ढंग यह समझाते हुए कि कभी-कभी हमें ''पहाड़ की चोटी'' के अनुभवों की आवश्यकता होती है, ''पहाड़

की चोटी से घाटी तक'' हो सकता है, परन्तु जीवन घाटियों में जीया जाता है। इस कहानी का एक और ढंग प्रभु के मानवीय पक्ष पर अतिरिक्त ज़ोर देने और परिस्थितियों को हमें परेशान करने की हमारी प्रवृत्ति के लिए प्रासंगिकता के साथ ''वह दिन जब यीशु घबराया था'' हो सकता है।

मछली के मुंह में सिक्के का चमकदार आश्चर्यकर्म देखभाल पर संदेश का आधार हो सकता है कि हम प्रभु के काम पर प्रतिकूल प्रकाश न डालें। ''छोटों'' पर यीशु की शिक्षाओं से कई उद्देश्य पूरे हो सकते हैं, जिसमें बच्चों के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी, नये चेलों के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी आदि पर शिक्षा शामिल है। छोटे बच्चों की तरह बनने की मसीह की चुनौती से बच्चों जैसे बनने पर हमें कई प्रवचन तैयार करने की प्रेरणा मिली है। सामान्य तौर पर मन परिवर्तन पर शिक्षा देने के लिए कई लोगों ने ''यदि तुम न फिरो'' वाक्यांश (''मन परिवर्तन'' शब्द का अर्थ और मन परितर्वन में अलग-अलग घटकों) का भी इस्तेमाल किया है।

अन्तिम टिप्पणी यह है कि मत्ती 18:15-35 अगले पाठ से अधिक इस पाठ से स्वाभाविक तौर पर मेल खाता है। मैं अगले दो अध्यायों को और एकरूप बनाने के लिए इस पाठ को आयत 14 से समाप्त करता हूं। परन्तु आप यीशु की महान गलीली सेवकाई के दौरान दिए गए अन्तिम उपदेश को समेटने के लिए इस पाठ के साथ 15 से 35 आयतों को शामिल कर सकते हैं। यदि आप ऐसा करते हैं तो आप ''चेला होने का (पांचवां) चिह्न'' जोड़ सकते हैं। ''अपनी भावनाओं के द्वारा नहीं, प्रभु के निर्देशों के द्वारा चलें।''

टिप्पणियां

[1]द लिविंग बाइबल का अनुवाद। [2]यीशु के आलोचकों के कामों तथा व्यवहार का पता चलता है। [3]देखें 2 तीमुथियुस 2:13. [4]कहानी पर अधिक जानकारी के लिए, अगला प्रवचन देखें। [5]मरकुस के वृत्तांत में जोड़ा गया, ''यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से निकल नहीं सकती'' (मरकुस 9:29)। प्रार्थना और विश्वास के सम्बन्ध पर चर्चा के लिए अगला प्रवचन देखें। [6]पुस्तक में आगे ''मेरे अविश्वास का उपाय कर'' पाठ में चंगाई पर इस घटना की चर्चा देखें। [7]संक्षेप में यह स्पष्ट नहीं है कि वे गलील में कब लौटे। अधिकतर टीकाकारों का मानना है कि रूपान्तर तथा दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़के की चंगाई कैसरिया फिलिप्पी के निकट ही हुई और इन्हीं घटनाओं *के बाद,* यीशु गलील में चला गया। कुछ लोगों का विचार है कि यीशु और बारह चेले रूपान्तर तथा चंगाई की घटना से पहले ही गलील में चले गए थे। कुछ टीकाकारों का विचार है कि गलील का दौरा रूपान्तर और चंगाई *के बीच* के दौरान हुआ। [8]मरकुस के वृत्तांत में ''तीन दिन के *बाद*'' है, जबकि मत्ती के वृत्तांत में '' *तीसरे* '' दिन है। हम में से कइयों के लिए दोनों शब्दों का अलग-अलग अर्थ है-परन्तु यहूदियों के सामने ऐसी कोई समस्या नहीं थी। यीशु के कब्र में तीन दिन होने या न होने के अध्ययन के समय हम इसे ध्यान में रखेंगे। [9]यीशु की मृत्यु की इस घोषणा के थोड़ी देर बाद, प्रेरित यह बहस करने लगे कि राज्य में सबसे बड़ा कौन होगा (देखें लूका 9:45, 46)। उनके मन में अभी भी एक भौतिक और सांसारिक, राजनैतिक राज्य था। प्रेरितों जैसी अवधारणाएं रखने वाले दूसरे यहूदी अपनी मृत्यु पर यीशु की शिक्षा से कैसे उलझन में पड़े, इसके एक उदाहरण के लिए, देखें यूहन्ना 12:33, 34. [10]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैन्ट्री ऑन लूक* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1975), 187.

[11]केवल मत्ती ने ही, जो पहले चुंगी इकट्ठा करने का काम करता था, मन्दिर के कर की बात लिखी। [12]''दो द्राखमा'' यूनानी में एक ही शब्द से लिया गया है। [13]नये नियम में एक द्राखमा के सिक्के का उल्लेख केवल लूका 15:8, 9 में ही मिलता है। मत्ती 17 वाले शब्द का अर्थ दो द्राखमा का सिक्का है। [14]जहां मैं रहता हूं, वहां हम कहेंगे ''न्यूनतम मज़दूरी।'' [15]पतरस अधिकारियों से बातें करने के बाद ''घर में आया'' मत्ती 17:25, सो वह अवश्य ही बातचीत के समय घर से बाहर गया होगा। [16]आवश्यक नहीं कि यीशु यह कह रहा हो कि पतरस को भी छूट है; परन्तु प्रेरित को छूट हो या नहीं, मसीहा का निष्कर्ष एक ही था कि कर चुकाया जाना चाहिए। [17]पेशेवर मछुआरा होने के कारण, पतरस सामान्यतया जाल का ही इस्तेमाल करता था (मत्ती 4:18), जाल में सैकड़ों मछलियां आती थीं परन्तु पतरस को तो इस समय केवल एक ही मछली की आवश्यकता थी। [18]रिचर्ड रोजर्स, *बिहोल्ड योर किंग (बुक ऑफ़ मैथ्यू)* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसेट स्टडी सीरीज़, पृष्ठ नहीं), 22. [19]नये नियम में केवल यहीं पर चार द्राखमा के सिक्के की बात है। [20]पौलुस ने विशेष परिस्थितियों में अपने अधिकारों का त्याग करने की आवश्यकता पर दो विस्तृत चर्चाएं लिखी हैं (रोमियों 14; 1 कुरिन्थियों 8-10)।

[21]आगे मत्ती 20:21; मरकुस 10:37 देखें। [22]कफ़रनहूम (मरकुस 9:33)। गलील के आस-पास वे पहले ही काफ़ी घूम लिए थे, जिसके बाद वे कफ़रनहूम में चले गए। [23]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप्प वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 430-31. [24]क्या यह पतरस के बच्चों में से कोई हो सकता है? [25]सच्ची दीनता पिछले भाग में चर्चा किए गए गुण में मिलती है: अपने आप को भूल जाना। आम तौर पर, छोटे बच्चे अपनी पहचान ''महान'' या ''तुच्छ'' जैसे व्यर्थ शब्दों से नहीं करते। [26]आगे के दिनों में, यीशु अक्सर चेलों को स्वार्थी महत्वाकांक्षा न रखने की चेतावनी देता था (देखें मत्ती 23:8-12; लूका 22:24-27)। [27]देखें लूका 14:11; 18:14; प्रेरितों 20:19; इफिसियों 4:2; कुलुस्सियों 3:12; याकूब 4:6; 1 पतरस 3:8. [28]मत्ती 18:6 *विश्वास करने वाले* छोटे बच्चों की बात करता है। मरकुस 9:37 किसी छोटे का स्वागत करने के लिए *किसी चेले* को पानी का ठण्डा कटोरा देने का स्वागत करता प्रतीत होता है। मत्ती 18:12, 13 में भेड़ों के *भटकने* की बात ''छोटों'' (आयत 14) के लिए ही की गई लगती है। [29]यीशु ने पहले अपने चेलों को ग्रहण करने वाले लोगों के लिए इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया था (मत्ती 10:40; यूहन्ना 13:20 भी देखें)। [30]''जो घोषित शत्रु न हो, उसे मित्र के रूप में माना जा सकता है'' (रॉबर्ट एल. थॉमस, सं., एण्ड स्टैनली एन. गंडरी, सह. सं., *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* [शिकागो: मूडी प्रैस, 1978], 125)।

[31]प्राचीन समय में, कुछ सभ्यताओं में लोगों को मृत्यु दण्ड देने के लिए चक्की के पाट से बांधकर समुद्र में फैंक दिया जाता था। हाल ही के वर्षों में, अमेरिका में लोगों को भारी वस्तुओं से बांधकर नदियों, झीलों या सागर में फैंकने का पता चला है। [32]यह स्पष्ट है कि यीशु नरक (*gehenna*) के लिए सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल कर रहा है: कीड़े आग में तो जीवित नहीं रह सकते। सामान्यतया इस बात में सहमति है कि कीड़ों (कृमियों) और आग के रूपक यरूशलेम के दक्षिण में कूड़े के ढेर से लिए गए हैं, जिसे हिन्नोम, या बेन-हिन्नोम की घाटी कहा जाता था (देखें 2 इतिहास 28:3; 33:6; नहेमायाह 11:30; यिर्मयाह 7:31, 32; 19:2, 6; 32:35)। कीड़ों का रूपक सम्भवतया दोषी विवेक के अनन्त यन्त्रणा सहने के लिए है (लूका 16:25-28), जबकि आग का रूपक परमेश्वर की उपस्थिति से अलग होकर अनन्तकाल का सन्ताप सहना है (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। [33]ये शब्द बहुत से प्रारम्भिक हस्तलेखों में नहीं मिलते, परन्तु वे वस्तुओं को सम्भालकर रखने की अवधारणा पर ज़ोर अवश्य देते हैं: पुराने नियम के समयों में, वाचा का नमक (लैव्यव्यवस्था 2:13) बलिदान को शुद्ध और सम्भाले रखता है। [34]आयत 11 जो KJV की तरह हिन्दी अनुवाद में जोड़ी गई है, कई प्राचीन हस्तलेखों में नहीं मिलती। लूका 19:10 में हम बाद में इन शब्दों को देखेंगे। [35]मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 434. [36]स्थान अनुमति नहीं देता कि हम यहां पर पाठ के मुख्य प्वायंटों की समीक्षा करें, परन्तु आप ऐसा कर सकते हैं। [37]घमण्ड पर नये नियम के पदों के कुछ नमूने ये हैं: रोमियों 1:30; 2 तीमुथियुस 3:2; याकूब 4:6; 1 यूहन्ना 2:16.